International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 80-82

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 80-82
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-01-2022
Accepted: 13-03-2022

भजन लाल
पीएच.डी. शोधार्थी, संस्कृत एवं प्राच्य विद्याध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
भजन लाल
पीएच.डी. शोधार्थी, संस्कृत एवं प्राच्य विद्याध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

वैश्विक समस्याएं: जाम्भाणी समाधान

भजन लाल

प्रस्तावना

भारतवर्ष अनादि काल से ही अध्यात्मिक शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी भारत भूमि पर अपौरूषेय वेद, पुराण, रामायण, महाभारत इत्यादि की रचना हुई। और इसी परम्परा में आज से लगभग 570 वर्ष पूर्व वर्तमान राजस्थान के नागौर जिले के पीपासर गाँव में एक अध्यात्मिक विभूति आविर्भूत हुई जिनका नाम है– जाम्भोजी।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जाम्भोजी 7 वर्ष तक मौन रहे उसके पश्चात् 27 वर्ष तक गौसेवा की तथा बाद में उन्होंने अनेक आध्यात्मिक उपदेश प्रदान किए और इन उपदेशों को 'सबदवाणी' कहा जाता है। वर्तमान में सभी 'सबद उपलब्ध नहीं हैं किन्तु संकलित तथा उपलब्ध 'सबदों' की संख्या 120 है। गुरू जाम्भोजी कहते हैं कि उन्होंने परम्परा प्राप्त ज्ञान को ही अग्रप्रेषित किया है जो कि वैदिक ज्ञान है–

'जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपां सांचा सूं सत भायों' [1]

इसी प्रकार भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि यह सनातन ज्ञान परम्परा से चला आ रहा है'

एवं परम्पराप्राप्तमिदं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगोनष्टः परन्तपः।। [2]

जाम्भोजी ने अपने सबदों में अभ्युदय व निःश्रेयम् दोनों का वर्णन किया है–

'जीवे न जुगति मुवै न मुगति'

इसी प्रकार का भाव मीमांसा दर्शन में भी प्राप्त होता है तथा मीमांसा दर्शन के आचार्य जैमिनी कहते हैं–

'यतोऽष्ठयुदय निःश्रेयम् सिद्धिः स धर्मः' [3]

अर्थात् जाम्भोजी ने अपने शब्दों में मोक्ष के साथ–साथ भौतिक उन्नति हेतु भी उपदेश प्रदान किए हैं। आज सम्पूर्ण विश्व जिन समस्याओं मे जूझ रहा है, उन सभी समस्याओं का समाधान गुरू जाम्भोजी ने अपने सबदों में प्रदान किया है। अगर आज की समस्याओं को देखा जाए तो कोई भी समस्या किसी अन्य समस्या से कमतर नहीं है किन्तु इन सब में भी सबसे गम्भीर समस्या है पर्यावरण प्रदूषण की।

पर्यावरण प्रदूषण

यह एक ऐसी समस्या है जिससे पृथ्वी पर मानव मात्र के अस्तित्व को खतरा है। इसके लिए हमने न जाने कौन–कौन से उपाय नहीं किए– 1992 में रियो डि जेनेरियो में पृथ्वी सम्मेलन, 2015 में पेरिस सम्मेलन और संवहनीय विकास को लेकर संयुक्त राष्ट्र अनेकों संवहनीय विकास समिट का आयोजन करवा चुका है। परंतु पर्यावरणीय खतरे अब भी बढ़ते जा रहे हैं। कहीं पशु पक्षियों की प्रजातियां खतरे में है तो कहीं ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं, कहीं अतिवृष्टि तो कहीं सूखा पड़ रहा है। इन सभी के संबंध में पर्यावरण संरक्षण हेतु गुरू जाम्भोजी के सबदों में हमे समाधान प्राप्त होता है।

वास्तव में गुरू जाम्भोजी आचार्य हैं– आचार्य शब्द की निरुक्ति करते हुए यास्काचार्य निरुक्त में कहते हैं'आचार्य आचारं ग्राह्यति' [4] अर्थात् आचार्य वह है जो अपने आचरण से सिखाएं और इस बात की पुष्टि शब्दवाणी के इस उद्धरण में होती है जिसमें गुरुजी कहते हैं–'हरी कंकेड़ी मण्डप मेड़ीजहां हमारा वासा' [5] अर्थात् गुरु जाम्भोजी अपने निवास स्थान का पता बता रहे हैं तो उसमें भी पेड़ों का प्रसंग है, परन्तु दुर्भाग्य है कि आज के इस तथाकथित विकास के युग में हमें अपना पता बताना हो तो कंक्रीट जंगल की गलियों का उद्धरण देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त विश्नोई सम्प्रदाय के 29 नियमों में कहा गया है कि– 'हरे पेड़ों को नहीं काटना चाहिए' इस नियम की पालना इस स्तर पर की गई है कि 18वीं सदी में जोधपुर जिले के खेजड़ली गाँव में अमृता देवी सहित 363 नर–नारियों ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राणों का बलिदान दे दिया था। क्या पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में इससे अधिक संवेदनशील घटना कुछ और हो सकती है? यह केवल एक घटना मात्र नहीं है अपितु एक प्रेरणा और चेतावनी है कि आज से 3 सौ वर्ष पूर्व जब पर्यावरण को लेकर इतनी चिंता नहीं थी। पर्यावरण संतुलित था तब भी अमृता देवी सहित 363 लोग पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे देते हैं तो यह विचारणीय विषय है कि आज जब पर्यावरणीय ह्रास सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है, तब भी हम पेड़ों की अंधाधुंध कटाई कर रहे हैं।

गुरु जाम्भोजी अपने शब्दों में जीव हत्या का निषेध करते हैं–जीवां ऊपर जोर करीजै, अंतकाल होयसी भारूं [6] अर्थात् इस समय यदि जीवों के ऊपर अत्याचार करोगे तो अन्त समय में तुम्हें ही कष्ट उठाने पड़ेगें।

सुण रे काजी सुण रे मुल्ला सुण रे बकर कसाई
किणरी थरपी छाली रोसो किणरी गाडर गाई
सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जायों जीव न घाई। [7]

अर्थात् हे जीव हत्यारों! इस प्रकार की जीव हत्या का विधान न तो किसी शास्त्र में है और न ही किसी महापुरूष ने बताया है तो फिर तुम क्यों मूक प्राणियों की हत्या करते हो? अगर तुम्हारे शरीर में कांटा भी चूभ जाए तो असहनीय दर्द होता है, फिर बेचारे इन जीवों कितना कष्ट होता होगा? अतः इनकी हत्या मत करो।

'फीटा रे अण होता तानी, अलख लेखो लेसी जानी [8]

अर्थात् हे हत्यारों! क्या परमात्मा तुम्हारे एक–एक कुकर्म का फल आवश्य प्रदान करेंगें।

'गऊ विसाणों काहैं तानी, राम रजा क्यूं दीन्हीं दानी
कान्ह चराई रनवे बानी, निरगुण रूप हमें पतियानी [9]

अगर गायों की हत्या करनी ही होती तो भगवान् श्रीराम ने गायें दान क्यों दी, भगवान् श्रीकृष्ण ने गऊऐं क्यों चराई? अर्थात् परमात्मा ने गायों व अन्य जीवों की रक्षा का ही संदेश दे रहें हैं। इस प्रकार गुरु जाम्भोजी जीव हत्या का निषेध करते हैं, अगर यह आचरण सभी करें तो आज जो दुर्लभ प्रजातियों के ऊपर खतरा मंडरा रहा है, उसका समाधान किया जा सकता है।

स्वच्छता एवं स्वास्थ्यः स्वच्छता एवं स्वास्थ्य दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अधिकांश रोग अस्वच्छता के कारण होते हैं। इस संबंध में गुरु जाम्भोजी षारीरिक स्वच्छता की बात करते हुए अपने षब्दों में कहते हैं कि –

कंचन दानूंकछु न मानूं, कापड़ दानूं कछु न मानूं।
चोपड़ दानूं कछु न मानूं, पाट पटम्बर दानूं कछु न मानूं।
पंच लाख तुरंगत दानूं कछु न मानूं, हस्ती दानूं कछु न मानूं।
तिरिया दानूं कछु नहीं मानूं, मानूं एक सुचील सिनानूं। [10]

अर्थात् जाम्भोजी ने षील व प्रतिदिन स्नान को प्राथमिकताओं में रखा है। आज विश्व की एक गम्भीर समस्या एड्स भी षील व्रत के पालन न करने के कारण ही हैं षील अर्थात् पतिव्रात्य व पत्नीव्रात्य नियम का पालन करना। स्नान से बाह्य षुद्धि होगी तथा षीलव्रत के पालन से अन्तःकरण निर्मल होगा जिससे व्यक्ति षारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है।

गुरु महाराज खाद्यय पदार्थों की स्वच्छता के विशय में कहते हैं कि–पांणी वाणी इंधनी दूध इतना लीजे छान, [11] पानी, दूध इत्यादि को हमेशा छान के ही प्रयोग में लाना चाहिए जिससे कि कोई हानिकारक पदार्थ इनके माध्यम से षरीर में प्रवेश न करें।'स्वच्छता ही स्वास्थ्य की जननी है' मातृ स्वास्थ्य के बारे में 29 नियमों में कहा गया है कि महावारी के समय महिलाएं पाँच दिनों तक गृह कार्य न करें तथा प्रसूता स्त्रियों के लिए 30 दिन के सूतक का प्रावधान किया गया है। इसके माध्यम से माता के षरीर को प्र्याप्त विश्राम मिल जाता है तथा इस समय में वह अपना पूरा समय शिशु की देखभाल में लगा पाऐंगी साथ 81 ावह तनाव मुक्त रहेंगी।

अत्याहार का निशेध

'घणा तण जीम्या को गुण नाहीं मलभरिया भण्डारु' [12] इसी प्रकार भगवद्गीता में भी कहा गया है–

युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्टस्य कर्मसु
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा। [13]

इसके पश्चात् जाम्भोजी आंतरिक स्वच्छता के विषय में बताते हैं कि 'क्षमा, दया, हिरदै धरो' 'निदा झूठ वरजियो वाद न करणों कोय' [14] इस प्रकार गुरु महाराज कहते हैं कि हमारे हृदय में क्षमा व दया जैसे मानवीय गुण होने चाहिए। और हमारा अन्तःकरण पवित्र होना चाहिए। इस प्रकार यदि व्यक्ति का अन्तःकरण स्वच्छ रहेगा तो वह तनाव ग्रस्त नहीं होगा इस प्रकार व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

महिला सम्मानः गुरु जाम्भोजी शब्दवाणी के एक प्रसंग में चर्चा करते है जिसमें भगवान श्रीराम लक्ष्मणजी से अनेक दोषों को पूछते हैं जिनमें एक दोष पूछते हैं 'कै तैं हरी पराई नारी' [15] नशा मुक्ति– जाम्भोजी के वाणी पर आधारित 29 नियमों में कहा गया है 'अमल, तम्बाकू, भांग, मद्य, मांस, सूं, दूर ही भागे' अर्थात् व्यक्ति को किसी भी प्रकार का नशा नहीं करना चाहिए और यह नशा आज पूरे विश्व में प्रमुख समस्या बना चुका है विशेष रूप से युवा वर्ग को इसकी लत लगने के पश्चात् वे इसे प्राप्त करने के लिए किसी भी स्तर का अपराध कर बैठते हैं। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर बड़े स्तर पर इसकी तस्करी भी होती है, इस प्रकार यह राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय खतरे उत्पन्न कर रहा है। गुरु महाराज दशे का पूर्ण निषेध करते हैं।

स्मानताः जाति व्यवस्था का विरोध करते हुए तथा वर्ण व्यवस्था की स्थापना करते हुए गुरु जाम्भोजी कहते है–'घणां दिनां का बड़ा न कहिबा, बड़ा न लंघिबा पारूं। 'उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारू' [16] इस प्रकार भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि–'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः [17] । भगवान बुद्ध ने कहा है–'मा जातिं पुच्छ। आचरणं पुच्छ। इस प्रकार स्पष्ट है कि केवल जाति के आधार पर किसी को हेय दृष्टि से देखना ठीक नहीं है अपितु संबंधित व्यक्ति के गुण व कर्म के आधार पर व्यवहार किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त गुरु महाराज कहते हैं कि–

'तइया सासूं तइया मांसूं, तइया देह दमोइ।
उत्तम मध्यम क्यूँ जाणि जइ, बिबरस देखो लोई।। [18]

वही श्वास जो पुरूष में चलता है वह स्त्री में भी चलता है जो मांस पुरूष के शरीर में है वह स्त्री के शरीर में भी है और यह पंचभौतिक देह भी समान है तो फिर इनमें परस्पर उत्तम एवं मध्यम का भेदभाव क्यों? गुरु जाम्भोजी कहते हैं– 'दिल दिल आप खुदायबंद जागयो, सब दिल जाग्यो सोई' [19] अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में परमात्मा का वास है, सबके हृदय में भगवद्ज्योति प्रकाशित है तो फिर भेदभाव किस बात का?
भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैंकि– 'सर्वस्य चाऽहं हृदि सन्निविष्टो' [20]
'समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेषोऽस्ति न प्रियः। [21] अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरे लिए सभी प्राणी समान है और मैं सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान हूँ।

कर्त्तव्य कर्म के प्रति प्रेरणाः गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जितने भी लोककल्याण व आत्मकल्याण के जो कर्म हैं उन्हें अवश्य ही बिना प्रमाद के कर देना चाहिए क्योंकि यह शरीर नश्वर है–'वस्तु पियारी खरचो क्यूं नाहीं, किंहिं गुण राखो टाली' [22] अर्थात् हे मनुष्य अपनी प्रिय वस्तुओं यथा धन, शरीर इत्यादी का उपयोग क्यों नहीं करते हो वैसे भी ये नश्वर है अतएव लोककल्याण व आत्मकल्याण हेतु कर्त्तव्य कर्म में रत रहो। 'जो कुछ कीजै मरणे पहले मत भल कहि मर जाइचे' [23] गुरु महाराज कहते हैं कि मृत्यु ध्रुव है–'म्हां देखता देव दानव सुर नर खीणां, बीच गया बेराणों' [24] भगवद्गीता में भी कहा गया है
'जातस्य हि ध्रुवं मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।। [25]
अर्थात् जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु ध्रुव है, और जिसकी मृत्यु हुई है उसका जन्म ध्रुव है। अतः इस जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होने के लिए अपना कर्त्तव्य कर्म करते हुए भगवन्नाम का जप करना चाहिए।

वैश्विक शान्ति व विश्वबन्धुत्वः वैश्विक शान्ति संयुक्त राष्ट्र का भी एक मुख्य लक्ष्य है– आज विश्व का हर देश परमाणुशक्ति सम्पन्न बनना चाहता है परन्तु एक परमाणु बम भी कई अनेक देशों का अस्तित्व समाप्त कर सकता है फिर भी हम सुरक्षा के नाम पर ऐसे भयंकर बम बनाते जा रहे हैं। जब बम बन रहे हैं तो निश्चित ही उनका उपयोग भी किया जा सकता है और हिरोशिमा नागासाकी में हुई परमाणु त्रासदी आज भी डरावनी लगती है। इसी संदर्भ में गुरु जाम्भोजी कहते हैं–'यह कंवराई खेह रलाई, दुनियां रौले कंवर किसो' [26] इस संसार की प्रभुता एक दिन मिट्टी में मिल जाएगी वह सत्तावान किस काम का जो दुनिया का विनाश कर दे 'आवत काया ले आयो थो। जातै सूको जागो। अर्थात् गुरु महाराज मनुष्यों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि जब यह शरीर नश्वर है और एक दिन नष्ट होना है तो क्यों एक–दूसरे से लड़–झगड़ कर समय व्यर्थ करते हो अपितु अपने समय को आत्मसाक्षात्कार में लगाना चाहिए। गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि शान्ति की स्थापना हेतु व्यक्ति को अपने अंदर परोपकार की भावना विकसित करनी चाहिए क्योंकि जब हम किसी का उपकार करेंगें तो अपकार का प्रश्न ही नहीं उठता है–'संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं घण बरषंता नीरूं, संसार में उपकार ऐसा ज्यूं रूही मध्य खीरू। 27 भारतीय साहित्य भी कहता है–

'परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्तिगावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्'।। [28]

यजुर्वेद में सम्पूर्ण विश्व की शान्ति हेतु प्रार्थना की गई है–
'ऊँ द्यौः शान्तिरन्तारिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः [29]

अशान्ति का कारणः मार्टिन किंग लूथर कहते हैं–म ींअम हनपकमक उपेपसमे इनज उपेहनपकमक उंद अर्थात् आज के समय में हमारे द्वारा निर्मित अस्त्र–शस्त्र तो नियंत्रित हैं परन्तु मनुष्य अनियंत्रित हैं।

उपसंहारः गाँधीजी कहते थे कि धरती माता के पास इतने संसाधन हैं कि सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है परन्तु लालच की नहीं। श्छममक बंद इम निसपिससमक व िमअमतलवदम इनज ूम बंददवज निसपिसस जीम हतममक व िंदलवदमण आज सम्पूर्ण विश्व जिन समस्याओं से जूझ रहा है उन समस्याओं का समाधान गुरु जाम्भोजी 15वीं शताब्दी में ही दे चुके हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी अपने जीवन में इस सिद्धांतो को धारण करें और इन समस्याओं से जूझ रहे सम्पूर्ण विश्व तक भी गुरु महाराज की वाणी को पहुंचाएं।

संदर्भ सूची

1. सबदवाणी 46
2. भगवद्गीता 4.2
3. वैशेषिक सूत्र 1.1.2
4. निरूक्त
5. शब्दवाणी 73
6. शब्दवाणी 9
7. शब्दवाणी 8
8. शब्दवाणी 75
9. शब्दवाणी 75
10. शब्दवाणी 104
11. 29 नियम
12. शब्दवाणी 26
13. भगवद्गीता 6.17
14. 29 नियम
15. शब्दवाणी 61
16. शब्दवाणी 26
17. भगवद्गीता 4.13
18. शब्दवाणी 50
19. शब्दवाणी 50
20. भगवद्गीता 15.15
21. भगवद्गीता 9.29
22. शब्दवाणी 86
23. शब्दवाणी 30
24. शब्दवाणी 69
25. भगवद्गीता 2.47
26. शब्दवाणी 68
27. शब्दवाणी 66
28. संस्कृत सुभाषितम्
29. बृहदारण्यकोपनिषद्